ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 8 कुल पृष्ठ-8 15 से 21 फरवरी, 2024 दयानन्दाब्द 199 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 मा. कृ.-1

चलो हैदराबाद! चलो हैदराबाद!! चलो हैदराबाद!!!

निजाम हैदराबाद के अत्याचारों से संघर्ष करने वाले आर्यों का निमंत्रण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज नलगोंडा के सौजन्य से

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं
आर्य समाज नलगोंडा के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

विशाल राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक – 1, 2 एवं 3 मार्च, 2024 स्थान – आर्य समाज नलगोंडा, हैदराबाद (आ. प्र.+तेलंगाना)

विशिष्ट अतिथि
आचार्य बालकृष्ण जी

मुख्य अतिथि

विश्व विख्यात योग गुरु
स्वामी रामदेव जी महाराज

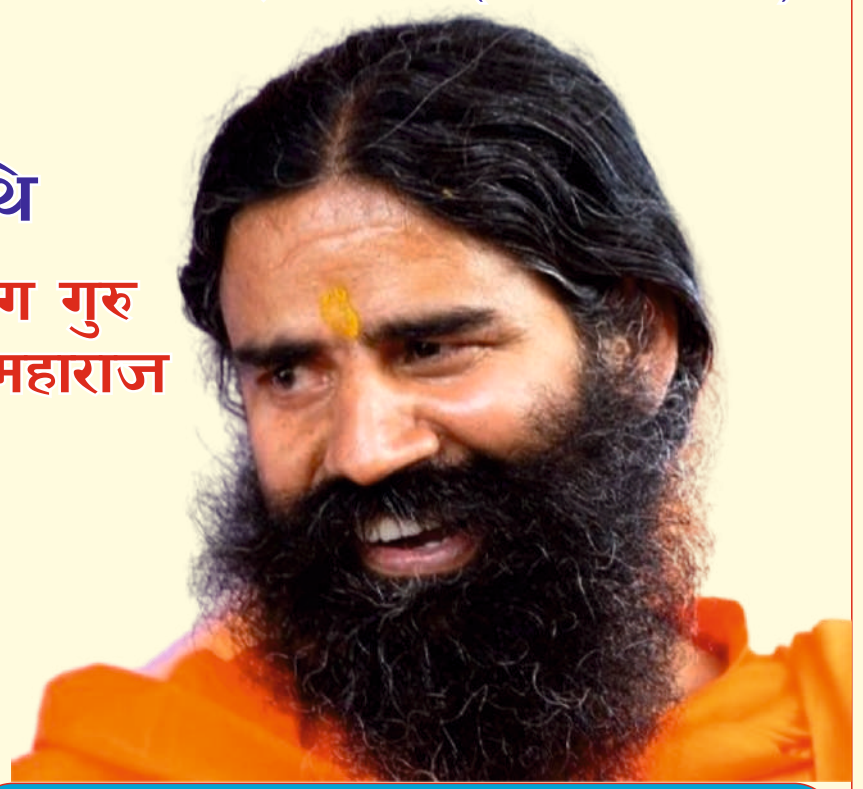

कार्यक्रम

200 कुण्डीय यजुर्वेदीय महायज्ञ का भव्य आयोजन

1 मार्च, 2024 (शुक्रवार) को
सायं 4 बजे से शुभारम्भ

राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन
2 मार्च, 2024 (शनिवार)

राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन
3 मार्च, 2024 (रविवार)

ऐतिहासिक शोभा यात्रा 2 मार्च, 2024 (शनिवार) को

इस राष्ट्रीय सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर के आर्य नेता, विद्वान्, प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा यज्ञ को सम्पन्न करवाने के लिए गुरुकुलों के आचार्य/आचार्या, ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणी आदि पधार रहे हैं। इस आर्य महासम्मेलन में दक्षिण भारत की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य परिवारों से और सामाजिक व सांस्कृतिक सुधारवादी परम्पराओं में विश्वास रखने वाले हजारों भाई–बहन पधार रहे हैं। देश के समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि उपरोक्त महासम्मेलन में भारी संख्या में प्रधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती को ऐतिहासिक बनायें। निजाम हैदराबाद के अन्याय एवं अत्याचारों से संघर्ष करने वाली आर्य जनता हजारों की संख्या में महर्षि को स्मरण करने के लिए एकत्रित होगी। आप भी पधारकर इस ऐतिहासिक कार्यक्रम के साक्षी बनें।

स्वामी आर्यवेश
महासम्मेलन अध्यक्ष

प्रो. विट्ठलराव आर्य
महामंत्री सार्वदेशिक सभा

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
सान्निध्य

निवेदक – आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना एवं आर्य समाज नलगोंडा (आ.प्र.+तेलंगाना) मो.:–9849560691

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

अंधविश्वास का बढ़ता बोलबाला

– अशोक आर्य

कोकिई बार हम सोचते हैं कि जड़–पूजा का जो स्वरूप व अंधविश्वास जनित जो घटनाएँ कथाएँ हम देखते–सुनते हैं वे हमारे भारत में ही हैं क्योंकि यहाँ गरीबी और अशिक्षा ज्यादा है तथा पौराणिक परम्परा में इसके आधार भी हमें प्राप्त हैं, पर यह बात सत्य नही है। विश्वभर में विस्तृत अन्य मतों में भी 'चमत्कार को नमस्कार' की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

ऐसी मान्यताओं की पृष्ठभूमि में वस्तुतः प्रमुख रूप से तीन तत्व कार्य करते हैं।

प्रथम – मानव मन सामान्य तौर पर प्रत्यक्ष पर विश्वास करता है, साकार प्रतिमा में उसे अपनी श्रद्धा व्यक्त करने हेतु प्रत्यक्ष आधार मिल जाता है। इसके साथ देखा–देखी, अधिकांश द्वारा अनुकरण व दृढ़ परम्परा का निर्मित हो जाना, उसे तात्विक चिंतन तथा विश्लेषण से दूर ले जाता है। एक मनुष्य के रूप में ही ईश्वर की कल्पना व उसके साथ तथावत् व्यवहार उसे सहज लगता है तथा ऐसी ही मानसिकता वाले करोड़ों की संख्या के मध्य सृष्टि क्रम से विरुद्ध घटनाओं को भी वह तर्क से परे मानता है।

कवि बड़े विकट और तर्काधारित सटीक प्रश्न करता है –

अजब हैरान हूँ भगवन तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

भोग लगाने पर तंज करते हुए कवि लिखता है कि जो सारे संसार को खिलाता है उसे कैसे और क्या खिलाया जा सकता है, जो सारे संसार को प्रकाशित करता है उसे दीपक दिखाने का कार्य बाल–बुद्धि ही कहा जावेगा। पर ये प्रश्न हमारी विचारतन्त्री को संभवतः झकझोरते नहीं हैं, अतः जड़–पूजा स्थलों पर एक जैसे दृश्य दिखायी पड़ते हैं यथा भगवान् को भोग लगाना, नहलाना, कपड़े पहनाना, शयन कराना, पंखे झलना, कूलर लगाना यहाँ तक कि यह मानकर कि एक ही स्थान पर बैठे–बैठे ठाकुर जी बोर हो गए होंगे, उन्हें कभी–कभी बाहर भ्रमण भी कराना आदि–आदि। इसकी विस्तार से चर्चा इस आलेख का उद्देश्य नहीं है। बात हम यह कहना चाहते हैं कि जड़–पूजा से जुड़ी यह स्थिति भारत में ही नहीं बाहर भी है। लगभग एक वर्ष पूर्व हम बैंकाक गए थे, वहाँ पटाया में एक प्रसिद्ध बौध मंदिर है, वहाँ का दृश्य भारत से बिलकुल भी अलग नहीं था। मूर्तियों पर और तो और मिनिरल वाटर तथा कोल्ड ड्रिंक का भोग लगा हुआ था। एक बौद्ध भिक्षु हाथ में एक बाँस की झाड़ू सी लेकर लोगों के सिरों पर रख–रख कर उनकी समस्याओं को दूर कर रहा था। ठीक यहाँ जैसा माहौल। भीड़ की रेलमपेल। अस्तु।

दूसरी बात जो ऐसे स्थलों से जुड़ी हुई है वह है हर स्थल के महत्त्व व महात्म्य की अपनी गाथा। आज तक हमने ऐसा एक भी इस श्रेणी का स्थल नहीं देखा जहाँ के महत्त्व की अतिवादी चर्चा न की गयी हो तथा आगन्तुकों को प्रत्यक्ष व तुरंत लाभ की गारंटी न दी जाती हो। यही वह लोभ है जो शंकालुओं को भी, शिक्षितों को भी, तार्किकों को भी लाइन में लगवा देता है।

इसी में तीसरी बात का तड़का लगाकर उपस्थिति–वृद्धि को सुनिश्चित कर दिया जाता है, वह है चमत्कार। जो भी प्रबंधन इन तीनों फैक्टर्स की जितनी अच्छी मार्केटिंग कर लेगा उतनी ही भीड़ उसके द्वारा नियंत्रित स्थलों पर आयेगी।

यह श्रद्धा मन की मुराद पूरी करने की आशा का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह दावा केवल हिन्दू धर्मस्थलों के सम्बन्ध में है ऐसा समझना भारी भूल होगी। मुस्लिम तथा ईसाई धर्मस्थल भी चमत्कार तथा मनौती पूरी करने के दावे से उत्सर्जित आक्सीजन पर श्वांस ले रहे हैं।

क्योंकि 'मेरे सारे दुःख तुरंत दूर हो जायँ', यह ऐसी कामना है जिससे कौन बचा है? हाँ, जो कार्य–कारण सिद्धांत को अटल मानता है, परमेश्वर की कर्मफल व्यवस्था में जिनका अटल विश्वास है, जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध को असंभव मानते हैं उनकी बात भिन्न है, अन्यथा तो विपत्ति के समय, जहाँ से भी जैसे भी राहत मिले वैसा करने को अच्छे से अच्छे शिक्षित और तर्कशील लोग तैयार होते देखे जाते हैं। यह चमत्कार मेरे साथ हुआ है अथवा ऐसा मैंने साक्षात् देखा है, कहने वाले उत्प्रेरक तत्व के रूप में काम करते हैं। ऐसे तथाकथित चमत्कारों की अनेकानेक कारणों से कभी पूर्ण वैज्ञानिक तथा निर्दोष पद्धति से परीक्षा न होने से भ्रम–भंजन हो नहीं पाता, यही कारण है कि हिन्दू महिलाएँ हिन्दू धर्मस्थलों पर ही नही मुस्लिम धर्मस्थलों की शरण में बहुतायत से जाती देखी जाती हैं।

ऐसे स्थलों के अस्तित्व में आने के सम्बन्ध में भी ऐसी चमत्कारिक पृष्ठभूमि बतायी जाती है कि वे श्रद्धालुओं को अधिकाधिक आकर्षित कर सकें। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के 11 वें समुल्लास में कुछ स्थलों से जुड़ी कहानियों की समीक्षा की है। यह यथार्थ समीक्षा वे इस कारण कर पाए क्योंकि उन्होंने उन स्थलों की वास्तविकता तथा चमत्कार की असलियत को अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने ज्योतिर्लिंग, जगन्नाथ के मंदिर, ज्वालादेवी आदि के चमत्कारों का विश्लेषण सत्यार्थप्रकाश में किया है। विशेष जानकारी के लिए पाठकों को ये स्थल अवश्य पढ़ने चाहिए।

ठीक यही स्थिति हमें मुस्लिम तथा ईसाई धर्मस्थलों के सन्दर्भ में दिखाई दी। उसकी थोड़ी चर्चा यहाँ करेंगे। अजमेर की एक दरगाह के बारे में तो सभी जानते हैं। ख्वाजा साहब की दरगाह। वहाँ उर्स के अतिरिक्त भी मन्नतें माँगने वालों का तांता लगा रहता है।

एक दरगाह तारागढ़ के किले पर है। हमें पृथ्वीराज चौहान का किला देखना था। जब वहाँ पहुँचे तो एक शिष्ट नौजवान ने हमारी जिज्ञासा के उत्तर में कहा कि आपको दरगाह में होकर जाना पड़ेगा, लगे हाथ दरगाह के दर्शन भी कर लीजिये। रास्ते में वह जगह का महात्म्य तथा वहाँ के चमत्कार बताने लगा। उसके अनुसार मीराबाई की माताजी मनौती मानने वहाँ आयीं थीं और मन्नत पूरी होने पर पुनः चादर चढ़ाने आयी थीं। उसके अनुसार जिसने भी यहाँ आकर मन्नत मानी वह अवश्य पूरी हुई। वहाँ मुख्यस्थल पर बहुत सारे धागे ठीक उसी प्रकार बंधे थे जैसे हिन्दू धर्मस्थलों, पेड़ों पर बंधे रहते हैं। उसके अनुसार मन्नत माँगने वाले इन्हें बाँध कर जाते थे तथा अभिलाषा पूरी होने पर उन्हें खोलने भी आते हैं। उस नवयुवक ने यह भी बताया कि विशिष्ट दिनों में समाधि स्थल जोर–जोर से हिलता है। वहाँ घुड़सवारों की कई समाधियाँ हैं पर चमत्कार यह है कि उनकी संख्या घटती बढ़ती रहती है। बकौल उसके आप कभी भी गिन लें कभी गिनती एकसी नहीं होगी। इतना सब सुनते–सुनते एक दरवाजे के पास ले जाकर उसने बताया कि यह पृथ्वीराज के किले का बचा एकमात्र दरवाजा है जिसे सरकार ने संरक्षित घोषित किया हुआ है। देखने तो गए थे किला और देख सुनली दरगाह की कहानी। लाभ यह हुआ कि यह धारणा और पुष्ट हुई कि मत–मतान्तरों में भीड़ जुटाने तथा मान्यता वृद्धि के लिए एक ही जैसे उपाय प्राप्य हैं। तारागढ़ की दरगाह में हजरत मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार की समाधि है। जिज्ञासा हुई कि इन सूफी संत की क्या कहानी थी? उस युवक ने इन सूफी साहब की उदारता तथा सहिष्णुता की भूरि–भूरि प्रशंसा की। हमने इतिहास के कुछ पन्नों में झाँकने का प्रयास किया। आश्चर्य हुआ कि वो कोई दरवेश नहीं थे वह तो सैनिक था। वह शहाबुद्दीन गौरी का सेनानी था। जब शहाबुद्दीन ने अजयमेरु (अजमेर) पर अधिकार कर लिया तो इन मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार को वहाँ का गवर्नर नियुक्त कर दिया था। जब एक दिन मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार के अधिकांश सैनिक राजस्व वसूली करने बाहर गए थे तो मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार के साथ–साथ किले के अन्दर रह गए चन्द सिपाहियों का कत्ल राजपूतों ने कर अपनी हार का बदला लिया। एक सेनानी ने दरवेश की उपाधि कैसे प्राप्त की? जो जिन्दगी भर युद्ध करता रहा वह चमत्कार करने वाला संत कैसे बन गया? इस बारे में एक लम्बी कहानी गढ़ी गयी है। अजमेर के राजा से क्रुद्ध हो बदला लेने को तत्पर एक फकीर की सहायतार्थ गौरी के आदेश पर मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार निकाह के दौरान बीच में उठकर हिन्दुस्तान आ गए और अजमेर को फतह किया। इसी में अनेक चमत्कार जोड़ दिए गए। जैसे कि नमाज पढ़ रहे मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार पर जब एक वजनी पत्थर फैंका गया तो अंगुली के इशारे से उसे मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार ने बीच में ही रोक दिया जो आज भी उसी स्थिति में है, जिसे अधरशिला कहा जाता है।

तो चमत्कारों एवं सृष्टि विरुद्ध नियमों के कथन के बिना इन मजहबों की स्थिति नहीं है। सबसे बड़ी बात है कि कुरआन में इस बात को सिद्धांततः स्वीकार कर लिया गया है कि खुदा न सिर्फ मौजिजे और खुली निशानियाँ पैगम्बरों को देता है बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी तरफ से अपनी सत्ता को सिद्ध करने हेतु चमत्कार दिखाता रहता है। यही स्थिति बायबिल की है। ज्ञान–विज्ञान विरुद्ध सैकड़ों बातें इनमें भरी पड़ीं हैं। ईसा मसीह को भी ऐसी चमत्कारिक शक्तियों का स्वामी बताया गया है , वह स्पर्श मात्र से असाध्य रोगियों को ठीक कर देते थे, अब यह शक्ति चर्च के पादरियों में भी आ गयी है। वे तो स्पर्श के बिना भी दूरस्थ रोगियों को ठीक कर देते हैं। हमने ऐसी प्रार्थना सभा स्वयं देखी है जिसमें अंधों की आँख ठीक कर दी गयीं ऐसे अंधे को मंच पर बुला कर उसकी साक्षी भी दिलवायी गयी। पर उस प्रार्थना सभा में लगातार सात दिन तक आने के बाद भी एक ऐसी विकलांग बालिका जिसे हम पूर्व से जानते थे यथास्थिति में बनी रही, उसकी स्थिति में रत्ती भर भी सुधार नहीं हुआ। पाठक असलियत क्या है समझ सकते हैं।

ऐसे सभी स्थानों पर भारी भीड़ रहती है जो स्वयं आगे के लिए मार्केटिंग का कार्य करती है। 'नकटे को ईश्वर दर्शन' की कथा की तरह प्रायः ऐसे भक्तगण अपनी मुराद पूरी होने की पुष्टि भी कर देते हैं। यहाँ कोई तर्क नहीं चलता, विज्ञान का यहाँ कोई दखल नहीं है। बस जरा पता चलना चाहिए कि कहीं खडाऊँ स्वयं चलने लग गयी हैं, कहीं हनुमान जी की प्रतिमा रोने लग गयी है, कहीं मरियम की प्रतिमा रोने लग गई है, अंधविश्वास को आस्था का नाम देकर स्वयं को सही होने का आश्वासन देने वाले लोग भारी संख्या में पहुँच जाते हैं और देखते ही देखते एक नए तीर्थ का सृजन हो जाता है।

सभी मतों में गुरुओं बाबाओं की भी यही स्थिति है। दरगाहें मुराद पूरी करती हैं तो पादरी महोदय चंगाई। एक भी ऐसा बाबा नहीं जो इन अलौकिक शक्तियों से लैस न हो। और अगर कोई है तो फिर वह धन सम्पन नहीं हो सकता।

हम न किसी की आलोचना करना चाहते हैं न किसी का दिल दुखाना। पर चिंतन मनन हेतु तर्काधारित सत्य पर विचार करने हेतु प्रेरित करना हमारा कर्तव्य है। अभी कुछ दिनों पूर्व अत्यन्त प्रसिद्ध एक गुरु के बारे में बी.बी.सी. द्वारा निर्मित एक डोक्यूमैंट्री देखने में आयी। उसमें प्रमाण सहित बाबा के चमत्कारों की तो पोल खुली ही है साथ ही उनके जीवन के अनखुले पन्ने भी सामने आये हैं जिनका अन्वेषण तत्समय में प्रभावशाली लोगों के दबाब में नहीं हो पाया। एक धारावाहिक ऐसे संत पर बनाया गया जिसमें प्रत्येक एपिसोड चमत्कारों से युक्त था।

ऐसे सभी धर्मस्थलों, गुरुओं, मजहबों से जिस दिन गढ़े गए चमत्कारों की कहानियों को, उस स्थल पर आने से या दर्शन लाभ करने से होने बाले लाभों के वर्णनों को हटा दिया जावेगा तब किस स्थल पर कितनी भीड़ होगी यह देखने वाली बात होगी।

स्थिति यह है कि विश्वभर से आये दिन ऐसे चमत्कारों की घटनाएँ सामने आती रहती हैं। यहाँ कुछ बानगी प्रस्तुत है –

२००७ की बात है। २० जनवरी शनिवार का दिन था। राजकोट (गुजरात) के एक स्थानीय हनुमान मंदिर में हनुमान जी की आँख से आँसू बहने लगे। वायु–वेग से इस चमत्कार की खबर फैल गयी। रात होते–होते भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी। जैसे तैसे पुलिस प्रशासन को बुलाया गया। प्रशासन ने भीड़ को काबू में किया। आलम ये था कि लोगों ने अपनी झोलियाँ खोल दीं। दान देने लगे।

बनारस में भी एक सज्जन श्री नन्दलाल शर्मा के घर में स्थित हनुमान मंदिर में भी मूर्ति के आँसू बहने लगे। भक्तों की भीड़ का क्या कहना? नंदलाल का कहना था कि जब उसके बेटे ने उसे आँसू वाली बात बतायी तब उसे विश्वास नहीं हुआ पर जब उसने देखा तो यह सच था। उसने मूर्ति के चेहरे को पानी से धोया फिर भी हनुमान जी के आँसू बह रहे थे।

उधर भगवान् कृष्ण की लीला स्थली भी क्यों पीछे रहे। वहाँ एक छोटे गाँव में भी हनुमान जी रोने लगे। हमें आशा है कि पाठकगण को गणेश जी का दूध पीना याद होगा ही।

जड़ वस्तु में भावनाएँ उत्पन्न होना फलस्वरूप पत्थर अथवा लकड़ी की बनी प्रतिमा का रोना सृष्टिक्रम से विरुद्ध तथा असंभव है, पर यही तो वे साधन हैं जिनसे आस्था के नाम पर भारी भीड़ को आकर्षित किया जाता है तथा उनका बौद्धिक तथा अन्य प्रकार का शोषण किया जाता है। ऐसी चमत्कारी घटनाएँ भारत अथवा हिन्दुओं के यहाँ ही नहीं होतीं, इनसे कोई भी नहीं बचा है।

जापान के अकीता में सिस्टर एग्नस कतुस्को को पवित्र मेरी स्वप्न में दिखने लगीं। 28 जून 1973 को सिस्टर एग्नस के बाएँ हाथ के अन्दर की ओर क्रास की शक्ल का घाव उभर आया और इससे काफी मात्रा में खून बहने लगा तथा सिस्टर को असह्य वेदना भी हुई। 6 जुलाई को एग्नस ने प्रार्थना करते हुए पवित्र मेरी के लकड़ी के स्टेचू से आवाज आती सुनी। उसी दिन कुछ अन्य सिस्टर्स ने स्टेचू के सीधे हाथ से खून की बूँदें टपकते देखीं। स्टेचू का यह घाव 29 सितम्बर तक रहा फिर गायब हो गया। परन्तु उसी दिन स्टेचू के माथे तथा गले से पसीना निकलने लग गया। दो वर्ष पश्चात् 4 जनवरी 75 को प्रतिमा रोने लग गयी। 6 वर्ष 8 महीने तक कुल 101 बार प्रतिमा ने रुदन किया, साथ ही यह भी हुआ कि सिस्टर एग्नस जो पूरी तरह बहरी थी, पूर्ण ठीक हो गयी। अकीता विश्वविद्यालय में प्रतिमा से निकले खून, पसीने की जाँच की बताते हैं तथा जाँच रिपोर्ट में सभी चीजों को मानवीय बताया गया, ऐसा कहा जाता है। लकड़ी की प्रतिमा से मानवीय उत्पाद? संभव नहीं। अगर रिपोर्ट सही है तो फिर एक अन्य घटना की तरह किसी की जालसाजी की इसमें पूरी–पूरी संभावना है। पर आगे चर्च कर्मचारियों के डी. एन.ए.का मिलान तथा तुलनात्मक शोध नहीं किया गया। जून 88 में पोप बेनीडिक्ट 16 ने इस चमत्कार पर अपनी मोहर लगा दी अतः अब ईसाई समुदाय इस पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता। हमने ऐसे चमत्कार के पीछे इंसानी दिमाग की बात यूँ ही नहीं कही।

रोम में फोरिल में मार्च 2006 में सांता लूसिया चर्च के कस्टोडियन ने प्रसिद्ध किया कि पवित्र मेरी की प्रतिमा रोयी और उसकी आँखों से खून निकला। इस कस्टोडियन का नाम विन्सेंजो डी कोस्तेंजो था। यह कस्टोडियन अन्य की तरह भाग्यशाली नहीं निकला पुलिस ने इसकी सघन जाँच की तथा पाया कि विन्सेंजो डी शेष पृष्ठ 7 पर

27 फरवरी बलिदान दिवस पर विशेष

अग्निशलाका पुरुष – चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 556 देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गाँव में पं. सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं. सीताराम जी तिवारी के यहाँ 23 जुलाई, 1906 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। 5 वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुँच गया। वहाँ एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ दिया था। यह 15 वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था?काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है?युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम?'स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता?मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को 15 बेतों की सज़ा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेंत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहाँ से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।

आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओं के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियों को बहुत ठेस पहुँची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुँच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे चरित् नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पाँच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियों के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) में उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता–पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–माँ के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि 'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम्' के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था, उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ. प्र.) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के

आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड में अनेक क्रान्तिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' तथा अशफाक उल्ला खाँ को फांसी की सज़ा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन्न–भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुनः संगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगतसिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्टूबर, 1928 में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेरे पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहाँ यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में 'अलख निरंजन' का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

9 अप्रैल, 1929 ई. को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुँचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसार इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेंचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1937 को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांधी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर 22 मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी दल पुनः छिन्न–भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहाँ रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फंस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहां का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहाँ मिलेंगे। बस, सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुँच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहां से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था ..... धांय–धांय कर दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया। इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली। फिर भी उन्हें चार गोलियां लग गई। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनकी पिस्तौल में अन्तिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी में मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 27 फरवरी, 1931 का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान् बलिदान हुआ था उसे आज भी वहां की महिलाएँ हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है।। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् के मजबूत स्तम्भ श्री बृजेन्द्र मोहन भण्डारी का हुआ असामयिक निधन

6 फरवरी, 2024 को श्रद्धांजलि सभा हुई सम्पन्न

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी, राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी एवं पंजाब प्रान्तीय अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश आर्य हुए श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित

श्री सन्त कुमार आर्य ने किया कार्यक्रम का संचालन

सन् 1970 से सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के साथ जुड़े और स्वामी इन्द्रवेश तथा स्वामी अग्निवेश जी की प्रेरणा से जीवन के आखिरी श्वांस तक आर्य समाज एवं आर्य युवक परिषद् के कार्यक्रम में निष्ठा के साथ लगे रहे। पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् के मजबूत स्तम्भ श्री बृजेन्द्र मोहन भण्डारी का गत् 4 फरवरी, 2024 को असामयिक निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि 5 फरवरी, 2024 को पूर्ण वैदिक रीति से भाई रणधीर सिंह नगर, लुधियाना में की

गई। उनके सुपुत्र श्री चन्दन कुमार भण्डारी सिंगापुर से पधार चुके थे और उन्होंने ही अपने पूज्य पिता जी को मुखाग्नि देकर अंतिम बिदाई दी। स्व. श्री भण्डारी जी की स्मृति में 6 फरवरी, 2024 को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन भाई रणधीर सिंह नगर, लुधियाना के माता मंदिर में आयोजित हुई। श्रद्धांजलि सभा में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री रामवीर योगाचार्य आदि के अतिरिक्त लुधियाना एवं पंजाब

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य समाज बसी, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में ग्राम–बसी का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी रहे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बागपत के प्रधान चौ. ब्रह्मपाल सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा श्री तेजपाल सिंह ने संयोजन का दायित्व संभाला

इस अवसर पर यज्ञशाला की नींव स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से रखी गई

ग्राम–बसी, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश की स्थापना के 941 वर्ष पूरे हो जाने के उपलक्ष्य में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बागपत की प्रेरणा से आर्य समाज बसी की ओर से 14 फरवरी, 2024 को भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें ग्रामवासियों ने उत्सापूर्ण भाग लिया। इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में स्वामी आर्यवेश जी कार्यक्रम में विशेष रूप से पधारे, उनके अतिरिक्त जिला सभा के प्रधान चौ. ब्रह्मपाल सिंह, जिला सभा के पूर्व प्रधान मा. राजेन्द्र सिंह आर्य, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वेदपाल वैदिक, सुश्री तनु आर्या आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संयोजन श्री तेजपाल सिंह आर्य ने किया। कार्यक्रम का आयोजन महर्षि दयानन्द अकादमी में किया गया था।

अपने प्रमुख उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने गांव की स्थापना में जिन पूर्वजों की भूमिका रही उन्हें स्मरण करते हुए कहा कि 941 वर्ष के लम्बे इतिहास में इस गांव ने अनेक उतार–चढ़ाव देखे हैं। किन्तु अपनी पुरानी परम्पराओं एवं मर्यादाओं को आज भी बड़ी मजबूती के साथ संभाला हुआ है। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी के नवयुवकों को बुजुर्गों के त्याग एवं बलिदान से अवगत कराना चाहिए और उनके स्वाभिमान को जागृत करना चाहिए, ताकि वे अपने गांव को और सुन्दर एवं विकसित बना सकें तथा अपनी पुरानी परम्पराओं को निरन्तर जीवन में अपनायें। स्वामी जी ने आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने पर भी बल दिया और सुझाव दिया कि गांव में महिलाओं को आर्य समाज में लाने के लिए स्त्री आर्य समाज का

गठन किया जाये तथा युवाओं को जोड़ने के लिए आर्य वीरदल अथवा आर्य युवक परिषद् बनाया जाये। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के तत्वावधान में गांव की उन्नति के लिए जो भी कार्य आवश्यक हों उन्हें तत्परता से किया जाना चाहिए। लोगों के सुख–दुःख को बांटने की भावना जब तक आर्यजनों में नहीं आयेगी तब तक आर्य समाज आगे नहीं बढ़ पायेगा।

श्री वेदपाल वैदिक एवं तनु आर्या के भजनों का भी प्रभावशाली कार्यक्रम रहा और लोगों ने भजनों का खूब आनन्द उठाया।

उत्सव की अध्यक्षता कर रहे चौ. ब्रह्मपाल जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में आर्य समाज बसी के सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद देकर कार्यक्रम की सफलता के लिए उनकी प्रशंसा की। यज्ञ का दायित्व मा. राजेन्द्र सिंह आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला और पूरे कार्यक्रम का संयोजन जिला सभा के मंत्री श्री तेजपाल सिंह आर्य ने किया।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री ओमपाल सिंह, मंत्री श्री पवन आर्य, श्री जयपाल सिंह, श्री अजय सिंह आदि ने अतिथियों का ओ३म् पट्ट से सम्मान किया। भोजन एवं जलपान की व्यवस्था श्री लोकेश आर्य के घर पर की गई थी।

कार्यक्रम के अन्त में अकादमी के प्रांगण में यज्ञशाला की आधारशिला स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा रखी गई। और सभी ने संकल्प किया कि वे यज्ञशाला का निर्माण शीघ्रातिशीघ्र करेंगे। कार्यक्रम बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

स्व. चौधरी धर्मपाल आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी स्वर्गीया श्रीमती रामकली आर्या की पुण्यतिथि के अवसर पर ग्राम–बड़ावद, जिला–बागपत में विशेष यज्ञ का आयोजन

पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित विशेष यज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी हुए सम्मिलित

डॉ. जयेन्द्र कुमार आचार्य गुरुकुल नोएडा की उपस्थिति में हुआ यज्ञ सम्पन्न

क्षेत्र एवं गांव के सैकड़ों स्त्री–पुरुषों ने दी आहुति और लिये संकल्प

आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ता डॉ. जयेन्द्र आचार्य के चाचा श्री स्व. चौधरी धर्मपाल आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रामकली आर्या की पुण्यतिथि के अवसर पर उनके निवास ग्राम–बड़ावद, बागपत, उत्तर प्रदेश में यज्ञ एवं स्मृति सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी दोनों पुण्य आत्माओं को श्रद्धांजलि देने के लिए कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। प्रातः 9 बजे से 12 बजे तक बृहद यज्ञ का सुन्दर आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा पद को डॉ. जयेन्द्र आचार्य ने निष्ठा के साथ संभाला। आर्य समाज बड़ावद के समस्त पदाधिकारी एवं अन्य गांवों से पधारे प्रतिष्ठित आर्यजनों तथा परिवारजनों ने आहुतियां प्रदान करके यज्ञ को सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संक्षिप्त व्याख्यान में स्व. श्री धर्मपाल जी के संस्मरण सुनाकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी जी ने कहा कि स्व. श्री धर्मपाल जी एक समर्पित व्यक्तित्व के धनी थे और जीवन में समर्पण की भावना व्यक्ति को यश एवं कीर्ति प्रदान करती है। स्व. धर्मपाल आर्य जी के जीवन से हमें समर्पण सीखना चाहिए। वे स्व. चौधरी चरण सिंह जी के समर्पित राजनीतिक कार्यकर्ता थे एवं आर्य समाज के भी एक समर्पित प्रचारक थे। मेरा उनसे अत्यन्त आत्मीयता पूर्ण सम्बन्ध रहा। निःसंदेह उनका जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय था। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र आचार्य ने भी उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्व. श्री धर्मपाल आर्य जी के सुपुत्र श्री लक्षेन्द्र आर्य ने सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया और सभी के लिए प्रसाद वितरण की व्यवस्था की गई थी।

विशाल राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में विद्वान/विदुषियों की उपस्थिति

आचार्या सूयदिवी चतुर्वेदा

आचार्या सुमेधा

बहन पूनम आर्या

स्वामी आदित्यवेश

निर्मला योग भारती

आचार्य उदयन

बहन प्रवेश आर्या

स्वामी ब्रह्मानन्द

योगेन्द्र याज्ञिक

अमृता आर्या
विदुषी भजनोपदेशिका

आचार्य धनंजय

भंवर लाल आर्य
संचालक, आर्य वीरदल राजस्थान

कैलाश कर्मठ
आर्य भजनोपदेशक

ओ३म् का जाप और स्वास्थ्य विज्ञान

–आचार्य पं. विभुमित्र शास्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश'' के प्रारम्भ में लिखा है कि ''ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्य गर्भ, वायु और तेजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है।'' वेदों और शास्त्रों में भी ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है। वेद में ''ओ३म् एवं ब्रह्म'' वाक्य आया है, अर्थात् परमात्मा का नाम ओ३म् है। वह आकाश की तरह व्यापक है। ओ३म् सार्थक शब्द है, जो रक्षा करता है, उसे ओ३म् कहते हैं– अवतीत्योम्। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि ''ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं– ''ओमित्येतदश्चरमुद्तीथ मुपासीत।''

योगदर्शन में इसी ओ३म् नाम को ''प्रणव'' (ओंकार) कहा गया है– ''तस्य वाचकः प्रणवः''। श्रीमद् भगवद् गीता में ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है:–

ओंतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिता पुरा।।
तस्मादोमित्यु दाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ता सततं ब्रह्मवादिनाम्।।

नाम और नामी का सम्बंध अनादि और घनिष्ठ है। इसी कारण शास्त्रों में नाम जप की बड़ी महिमा है। योग शास्त्र में ''तज्जपः तदर्थ भावनम्'' कहा गया है, जिसका अर्थ है प्रणव अर्थात् ओ३म् का जप और उसके सार्थक स्वरूप का चिन्तन करना। ईश्वर स्वरूप को बार–बार आवृत्ति करना ही जप है। जप ईश्वर प्रणिधान का साधन है– क्योंकि चंचल मन की एकाग्रता करने में सहायक है और इससे मानसिक शुद्धि होती है। इसीलिए मनुस्मृति में जप यज्ञ को विधि यज्ञ से दस गुणा श्रेष्ठ कहा गया है– ''विधि यज्ञाज्जप यज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः।'' महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधना में जप को प्रथम स्थान दिया है– ''अनेन जपोपासनादि कर्मणा धमार्थ काम मोक्षाणा सधः सिद्धिर्भवेन्नः''। पूर्व के आर्यजन भजन गाते हुए कहते थे कि–

''ओ३म् के जप से हमारा ध्यान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह जाप हमको मुक्ति तक पहुँचायेगा।।''

इस ओ३म् जाप को अब आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से ही नहीं अपितु शारीरिक स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से भी देखा जा रहा है। मेडिकल साइंस अब उन बीमारियों का इलाज ढूँढ रहा है– जिससे आधुनिक दवाएँ हार चुकी हैं। विज्ञान पत्रिका 'साइंस'' में अभी हाल ही में एक शोध प्रकाशित हुआ है, जिसमें कहा गया है कि ओ३म् एक ऐसा शब्द है, जिसका अलग–अलग आवृत्तियों से रक्तचाप, दिल दिमाग, पेट और खून से जुड़ी हुई कई बीमारियों के इलाज में चमत्कारिक असर दिखा सकता है। यहाँ तक कि सेरीब्रल पैल्सी–जैसी असाध्य बीमारी में भी ओ३म् के उच्चारण से उपचार की संभावना बढ़ सकती है। दिल और दिमाग के रोगियों पर किये गये परीक्षण के विषय में उक्त पत्रिका में उल्लेख है कि रिसर्च एण्ड एक्सपेरिमेन्ट इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो सांइसेज के एक दल ने उक्त रोगों के विषय में शोध किया है और बहुत कुछ नई जानकारी प्राप्त की है। दल के प्रमुख प्रोफेसर जे. मॉर्गन के अनुसार उनके दल ने सात साल तक दिल और दिमाग के रोगियों पर परीक्षण किया और परीक्षण में देखा गया कि ओ३म् का अलग–अलग आवृत्तियों में और ध्वनियों में नियमित रूप से किया गया जाप काफी असरकारी है। ओम् का उच्चारण पेट, सीने और मस्तिष्क में एक कंपन पैदा करता है, जो शरीर की मृत कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है। ओ३म् का जप मस्तिष्क से लेकर नाक, गला, फेफड़े तक के हिस्से से बड़ी तेज तरंगों का वैज्ञानिक रूप से संचार करता है।'' परीक्षण के लिए मस्तिष्क और हृदय के विभिन्न रोगों से ग्रस्त २५०० पुरुषों और २००० महिलाओं को चुना गया, जिसमें से कुछ लोग बीमारी के अन्तिम चरण में पहुँच चुके थे। प्रो० मॉर्गन की टीम ने धीरे–धीरे उन लोगों को मिलने वाली बाकी दवाइयों को बंद कर वही दवाएँ जारी रखी जो जीवन बचाने के लिए जरूरी थीं। परिणाम चौंकाने वाला था। डाक्टरी निरीक्षण में उक्त रोगियों ने प्रतिदिन सुबह छह से सात बजे तक एक घंटे तक विभिन्न आवृत्तियों में ओ३म् का जाप किया। इसके लिए योग्य प्रशिक्षक भी रखे गये। हर तीन माह पर इन लोगों का शारीरिक परीक्षण करवाया गया। चार साल बाद सामने आये परिणाम आश्चर्य जनक थे। ७० फीसदी पुरुष और ८५ फीसदी महिलाओं को नब्बे फीसदी राहत मिली। प्रतिदिन ओ३म् के उच्चारण से अधि संख्यक रोगियों के स्वास्थ्य में काफी सुधार एवं दवाओं का असर भी बढ़ा।

ओम् का पहला जिक्र वेदों में मिलता है और ब्रह्माण्ड का कारण माना जाता है– ''ओं खं ब्रह्म''। भगवद् गीता में इसी प्रणव (ओ३म्) को मनुष्यों के शरीराकाश में भी व्याप्त माना गया है– ''प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु''। शरीराकाश से ही विभिन्न ध्वनियों का तथा प्रामाण, अपान, व्यान, उदान, समान– जैसे पंच प्राणों का संचरण होता है– जो स्वास्थ्य और आयु का कारण बनता है। इन पंक्तियों का लेखक स्वयं हृदय रोगग्रस्त है और पटना स्थित इन्दिरा कार्डियोलोजी हॉस्पिटल में सप्ताहों भर्ती रहा। वहाँ के निदेशक डॉ० एस.एन. मिश्रा ने तत्रत्य डाक्टरों से कई प्रकार की जांच करायी, कई बार ई०सी०जी० हुई और ''इको'' के द्वारा हृदय की रक्त धमनियों की सही स्थिति की जानकारी ली गई। वह स्क्रीन पर भी दिखायी गई– जिसे मैंने स्वयं और डाक्टरों की टीम के साथ वहीं कार्य करने वाली मेरी बड़ी पुत्री प्रतिभा कुमारी ने भी साश्रुनयनों से देखा और सब कुछ देखकर डाक्टरों के विचार से निदेशक ने सिरयस्ली समझ कर कारोनरी वायपास सर्जरी के लिए दिल्ली के अपोलो अस्पताल में रेफर कर दिया और कहा कि यहां जो भी इलाज संभव था किया गया। आप दिल्ली जाये। मैं अपनी शारीरिक और आर्थिक स्थिति से लाचार होकर चिकित्सार्थ दिल्ली न जा सका और अपने स्वाध्याय तथा स्वामी रामदेव जी से प्रेरणा पाकर ओ३म् जाप और प्राणायाम करने की ओर अग्रसर हुआ। आज छह साल से अपने सरस्वती भवन स्थित यज्ञशाला में बैठकर तथा कभी काल एकान्त नदी तट पर बैठ कर ओ३म् जप के साथ प्राणायाम करता आ रहा हूँ और अब बहुत कुछ स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर चुका हूँ। इस बीच मेरा ध्यान मनुस्मृति के उस श्लोक की ओर भी गया जिसमें जाप के साथ तीन महाव्याहृतियों का उल्लेख है– ''एतदक्षरमेतांच जपन् व्याहृति पूर्विकाम्।'' मैंने व्याहृतियों के साथ ओ३म् का जप और प्राणायाम करना शुरू किया और लाभ संतोषप्रद रहा। वस्तुतः तीन अक्षरों वाले ओम् (अ+उ+म्) के साथ तीन महा व्याहृतियों (भूः, भुवः, स्वः) का जप भी यदि प्राणायाम के साथ होता है, तो निश्चित ही प्राणापानादि शारीरिक वायु के संचरण से स्वास्थ्य में सुधार होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी संध्या की पुस्तक में इसीलिए प्राणायाम के मन्त्रों में महाव्याहृतियों का उल्लेख किया है, जो वैज्ञानिक सूझ है।

इस ओ३म् शब्द को लोग ओम्, ओ३म् (प्लुत) और तान्त्रिक या यौगिक रूप में लघुरूप देकर ॐ के रूप में भी लिखते हैं। यौगिक प्रक्रिया में जाकर वस्तुतः ओ३म् शब्द एकाक्षरी हो जाता है। शायद इसीलिए गीता में इसे एकाक्षरी कहा गया है– ''ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् माननुस्मरन्'' इत्यादि। इस ॐ की व्याहति प्राणायाम के समय श्वासों के वहिःसरण और अन्तः सरण के समय आसानी से किया जा सकता है। त्रयक्षरी ओ३म् और तीन व्याहृतियों के जाप से नाभि से लेकर मस्तिष्क की धमनियाँ जहाँ सामान्य होने लगती हैं– रक्त प्रवाह सामान्य होने लगता है, वहीं हृदयस्थ धमनियों की रुकावट भी धीरे–धीरे ठीक होने लगती है। इंटरनल ऑटोनोमिक नर्व्स पर असर पड़ने लगता है और दोनों की गतिविधियाँ कम हो जाती हैं। एंग्जाइटी, डिप्रेशन और रक्तचाप कम हो जाता है, व्यक्ति शान्ति महसूस करने लगता है। बीमारियों का निवारण आसान हो जाता है। हाँ, ओ३म् जाप और प्राणायाम क्रिया के साथ ही साथ युक्ताहार विहार का होना आवश्यक है और इस प्रकार का योग (ओ३म् का जप प्राणायाम तथा युक्ताहार विहार का संयोग) जीवन में शारीरिक दुःखों का निवारक हो जाता है–

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्ठस्य कर्मसु।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःख हा।।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

महर्षिदयानन्दस्य संस्कारविधौ नारीणां स्थितिः

– डॉ. मनुदेवबन्धुः, आचार्य वेदविभाग

प्रस्तावना

आर्यसमाजस्य संस्थापकः महर्षिदयानन्दः वेदोद्धारकः, राष्ट्रभक्तः,आर्यजातिसमुद्धारकः, संस्कृतभाषायाः प्रबलपोषकः, कुरीतिनिवारकः, पाखण्डखण्डकः, वेदभाष्यकारकः नारीणां कल्याणकारकश्चासीत्। यत्र महर्षिदयानन्दः वेदभाष्यं कृतवान्, तत्रैव सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका संस्कारविधि आर्याभिविनय वर्णोच्चारणशिक्षा व्यवहारभानु गोकरुणानिधि पञ्च महायज्ञ विधि आदीनां ग्रन्थाना प्रणेतापि आसीत्। वेदस्य माहात्म्यं व्याकुर्वन्दयान्दो लिखति –

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'

अमर ग्रन्थे सत्यार्थप्रकाशे मातृगुणान् व्याख्यापयन् दयानन्दो लिखति – **'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।'** यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञनवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए (मातृमान्) अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।'** धन्य वह माता हैकि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।'

गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे –

संस्कारविधेः गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे नारीणां महिमानं विशिनष्टि दयानन्दः – 'गर्भाधान उसको कहते हैं कि जो – **'गर्भस्याधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्।'** गर्भ का धारण अर्थात् वीर्य का स्थापन, गर्भाशय में स्थिर करना जिस क्रियासे होता है, उसी को गर्भाधान संस्कार कहते हैं। जैसे बीज और क्षेत्र के उत्तम होने से अन्नादि पदार्थ भी उत्तम होते हैं, वैसे उत्तम बलवान् स्त्री-पुरुषों से सन्तान भी उत्तम होते हैं। इससे पूर्ण युवावस्था यथावत् ब्रह्मचर्य का पालन और विद्याभ्यास करके अर्थात् न्यून से न्यून सोलह वर्ष की कन्या और पच्चीस वर्ष का पुरुष अवश्य हो और इससे अधिक वय वाले होने से अधिक उत्तमता होती है।क्योकि बिना सोलहवें वर्ष के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने के लिए अवकाश उपयुक्त और स्त्री के शरीर में गर्भ के धारण-पोषण का सामर्थ्य भी नहीं होता और पच्चीस वर्ष के बिना पुरुष का वीर्य भी उत्तम नहीं होता।

पुंसवनसंस्कारप्रसंगे –

महर्षिदयानन्दः पुंसवनसंस्कारप्रसंगे नारीणामारोग्यं स्वास्थ्यं सुसमीचीनं भवेत्, भोजनादिकं बलकारि भवेदिति प्रदर्शयन् लिखित – 'इसके पश्चात् स्त्री सुनियम युक्ताहार विहार करे। विशेषकर गिलोय, ब्राह्मी ओषधि और सूंठ (शुण्ठी) को दूध के साथ थोड़ी-थोड़ी खाया करे और अधिक शयन और अधिक भाषण, अधिक खारा, खट्टा, तीखा, कड़वा, रेचक, हरड़ आदि न खावे, सूक्ष्म आहार करे। क्रोध, द्वेष, लोभादि दोषों में न फंसे, चित्त को सदा प्रसन्न रखे, इत्यादि शुभाचरण करे।'

सीमन्तोन्नयनसंस्कारप्रसंगे –

सीमन्तोन्नयनसंस्कारः पूर्णरूपेण गर्भिणी स्त्रीणां कल्याणाय क्रियते। दयानन्दो लिखति – 'अब तीसरा संस्कार सीमन्तोन्नयन कहते हैं, जिससे गर्भिणी स्त्री का मन सन्तुष्ट, आरोग्य, गर्भस्थिर, उत्कृष्ट होवे और प्रतिदिन बढ़ता जावे।'

विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्याम्।
पुमांसं पुत्रानाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा॥

विष्णोः सर्वव्यापकस्य परमेश्वरस्य श्रेष्ठेन रूपेण सौन्दर्यपूर्णरूपेण अस्यां गवीन्यां गोसदृश्यां नार्यां पुमांसं बलवन्तं रोग रहितं पुत्रम् आधेहि। हे विष्णो! दशमे मासे इमां नारीं मदीयां पत्नीं सर्वगुणसम्पन्नस्य सन्तानस्य जननीं निर्मापय। अग्रे लिखति दयानन्दः – **'किं पश्यसि? प्रजां पश्यामि।'** येन-केन प्रकारेण प्रजा भवेदेव। सीमन्तोन्नयन संस्कारस्य समापन प्रसंगे महर्षिदयानन्दो लिखति –

'तत्पश्चात् एकान्त में वृद्ध कुलीन और सौभाग्यवती, पुत्रवती गर्भिणी अपने कुल की और ब्राह्मणों की स्त्रियाँ बैठें, प्रसन्न वदन और प्रसन्नता की बातें करें और वह गर्भिणी स्त्री उस खिचड़ी को खावे और वे वृद्ध समीप बैठी हुई उत्तम स्त्री लोग आशीर्वाद देवें।

ओ३म् वीरसूस्त्वं भव, जीवसूस्त्वं भव, जीवपत्नी त्वं भव।

हे नारि! त्वं वीरपुत्राणामुत्पादयित्री भव। हे स्त्री! त्वं जीवनशीलानामायुष्यमतां सन्तानानां जननी भव। हे पत्नी! त्वं जीवनशीलस्यायुष्मतः पत्युः पत्नी भव। त्वमेव समस्तपरिवारस्य कल्याणकर्त्री असि। त्वमेव सम्पूर्ण परिवारस्य पालयित्री असि। त्वमेव अन्नपूर्णा असि।

जातकर्मसंस्कारप्रसंगे –

जातकर्मसंस्कारः जातस्य जन्मप्राप्तस्य पुत्रस्य पुत्र्याः वा भवति। अमुस्मिन् संस्कार पुत्रस्य कल्याणाय आयुर्विद्या बल बर्धनाय पिता कर्मकाण्डं करोति, भगवन्तञ्च प्रार्थयति।

ओ३म् इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः।
सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत्॥

हे स्त्री! त्वं इडा स्तुत्या असि। त्वं मैत्रावरुणी असि। त्वं मैत्री सम्बन्धयोग्या असि। त्वं वरयितव्या असि। त्वं वीरपुत्रं वीराङ्गना पुत्रीं वोत्पादयित्री असि। त्वं स्वयमेवापि वीरवती भव। वीरता युक्तानि साहसिकानि कार्याणि कुरु। त्वं नारी असि। त्वमस्मानपि वीरान् भावय, निर्माय। दयानन्दो लिखति –

'इस मन्त्र में ईश्वर की प्रार्थना करके प्रसूता स्त्री को प्रसन्न करके पश्चात् स्त्री के दोनों स्तन किञ्चित् उष्ण सुगन्धित जल से प्रक्षालन कर पोंछ के..... बालक के मुख में देवें।'

परन्तु अद्यत्वे अत्याधुनिकाः नार्यः स्वदुग्धं न धापयन्ति, न पाययन्ति। परन्तु दयानन्दो लिखति सद्यो जाता माता यत् सद्यो जातं पुत्रं स्वकीयं स्तनस्थं दुग्धं स्तनन्धयमवश्यं पाययतु।

अद्यापि सुपरीक्षितमेतद् यत् माता यदि स्वकीयं पीतवर्णं स्वर्णिम वर्णं दुग्धं पाययति, तदा सन्तानं स्वस्थम्आयुष्मद् बलवद् विद्वांश्च भवति।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर
हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन
दिनांक 18 फरवरी, 2024 (रविवार) को
महर्षि दयानन्द पार्क, अर्बन स्टेट, जीन्द में होने जा रहा है।
आप अधिक से अधिक संख्या में पधारकर महासम्मेलन को सफल बनायें।
निवेदक
स्वामी रामवेश संयोजक
स्वामी आर्यवेश अध्यक्ष
महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा केन्द्र, 3705 अर्बन स्टेट, जीन्द (हरियाणा)

पृष्ठ 2 का शेष

अंधविश्वास का बढ़ता बोलबाला

कोस्तेंजो स्वयं अपना खून इस कार्य के लिए काम में लाया था। विधि विज्ञान विशेषज्ञों ने सघन जाँच में पाया कि प्रतिमा से जो खून का नमूना लिया था उसका डी.एन.ए. तथा विन्सेंजो डी कोस्तेंजो की लार का डी.एन.ए. आपस में मिलते थे। नतीजतन विन्सेंजो डी कोस्तेंजो पर अपवित्रीकरण का मुकद्दमा चलाया गया। ऐसी सैंकड़ों सहस्रों घटनाएँ होती रहती हैं। पर निश्चित सिद्धांत यह है कि कार्य–कारण सम्बन्ध और सृष्टिक्रम के विरुद्ध कुछ भी नहीं होता। भली प्रकार वैज्ञानिक तरीके से गंभीर व स्वतन्त्र जाँच की जाय तो हर चमत्कार के पीछे इंसानी दिमाग की मौजूदगी देखी जा सकती है अथवा कुछ एक प्राकृतिक ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं जिनकी अभी वैज्ञानिक व्याख्या नहीं की जा सकी है, पर ऐसे चमत्कार से आपका भाग्य बदलने वाला है यह तो कम से कम भूल जायँ। तनिक चतुराई से ऐसा भ्रम पैदा किया जा सकता है।

इटली के तीन वैज्ञानिकों ने चाक, हाईड्रेटेड लोहे तथा नमक के पानी से ऐसा मिश्रण बनाया जो कि तनिक हिलाने पर लहू जैसा गीला हो जाता है पश्चात् स्थिर होने पर सूख जाता है। एक अन्य वैज्ञानिक जान फिशर ने तेल–मोम तथा रंग को मिला ऐसा मिश्रण तैयार किया जो तापमान बढ़ने के साथ पिघलकर बहने लगता है।

विश्व में अनेक जगह ऐसे अंधविश्वासों से जन–जन को वैज्ञानिक तर्कों व प्रायोगिक तरीकों के सहाय से, बचाने के प्रयास चल रहे हैं। हमारे विचार से इस बौद्धिक विनाश को रोकना आर्यसमाज का प्राथमिक कार्य होना चाहिए। पर यह कार्य आज के युग में केवल लेखनी हिला देने से संभव नहीं है। ऐसी हर घटना के तार्किक व वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु पूरा सुविधा सम्पन्न प्रकल्प तैयार किया जाकर, उस निष्कर्ष को जन–जन तक पहुँचाने का प्रबंध आज के युग की शैली से कदमताल करते हुए करने के ठोस प्रयास होने चाहिए।

– चलभाष– ०६३१४२३५१०१, ०६००१३३६८३६

पृष्ठ 4 का शेष

पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् के मजबूत स्तम्भ श्री बृजेन्द्र मोहन भण्डारी का हुआ असामयिक निधन

के अन्य स्थानों से गणमान्य आर्यजन एवं उनके पारिवारिक सम्बन्धीजन सम्मिलित हुए। आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान एवं आर्य युवक परिषद् के स्तम्भ श्री सन्त कुमार आर्य ने श्रद्धांजलि सभा का संचालन किया। समाज के पुरोहित जी ने भजन प्रस्तुत किये।

स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्व. श्री बृजेन्द्र जी का देहावसान केवल उनके परिवार की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण आर्य जगत की बहुत बड़ी क्षति है। श्री बृजेन्द्र मोहन भण्डारी से मेरा 50 वर्ष पुराना सम्बन्ध है। जब वे अपने पैतृक गांव फिल्लौर में रहते थे तभी से मेरे साथ उनका अगाध सम्बन्ध हो गया था जो उनके अन्तिम समय तक बना रहा। मैं जब भी लुधियाना या पंजाब में अन्यत्र सड़क मार्ग से जाता तो रात्रि विश्राम श्री बृजेन्द्र जी के पास ही प्रायः किया करता था। उनके साथ आर्य समाज के संगठन एवं देश के बारे में अनेक बड़ी–बड़ी योजनाएं एवं कार्यक्रम बनाने की चर्चाएं किया करता था और वे सदैव हमें सर्वात्मना सहयोग एवं सम्बल प्रदान करते रहते थे। उनमें विरक्ति भाव उच्च कोटि का था। अपने इकलौते पुत्र चन्दन तथा इकलौती पुत्री रचना की शादी होने तथा उनके आत्म निर्भर होने के उपरान्त वे अपनी धर्मपत्नी पूज्या बहन उमा भण्डारी के साथ लुधियाना में रहते हुए पूरा समय सामाजिक कार्यों में लगाते थे। दोनों बच्चे विदेश में रह रहे हैं, किन्तु अपने परिवार की परम्पराओं का एवं अपने माता–पिता द्वारा बचपन में दिये गये संस्कारों का निर्वहन निष्ठा से करते हैं। स्वामी जी ने कहा कि श्री बृजेन्द्र जी के देहावसान से पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् का एक मजबूत स्तम्भ गिर गया जिसका हम सभी को बेहद दुःख एवं कष्ट अनुभव हो रहा है, किन्तु ईश्वर की व्यवस्था एवं कर्मफल चक्र के समक्ष नतमस्तक होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सभी पारिवारिकजनों को सांत्वना दी और प्रभु से प्रार्थना की परिवारजनों को इस दुःख की घड़ी में आत्म बल प्रदान करें।

श्री ओम प्रकाश आर्य ने स्व. भण्डारी जी के अनेक संस्मरण सुनाकर उनके जीवन पर प्रकाश डाला और कहा कि उनके जाने से मुझे व्यक्तिगत एवं आर्य समाज को गहरा आघात लगा है। वे मेरे अभिन्न मित्र भी थे और हम पिछले लगभग 55 वर्ष से स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की प्रेरणा से पंजाब में आर्य युवक परिषद् का कार्य करते आ रहे थे किन्तु वे हमें बीच में छोड़कर चले गये। इसका मुझे अत्यन्त दुःख है। मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आदरणीया उमा भाभी जी और परिवार के सभी बच्चों के प्रति अपनी सांत्वना व्यक्त करता हूँ।

इस अवसर पर परिवार की ओर से कुछ संस्थाओं को दान राशि भी दी गई। स्व. बृजेन्द्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती उमा भण्डारी जी के सुपुत्र श्री चन्दन भण्डारी एवं उनकी धर्मपत्नी तथा सुपुत्री श्रीमती रचना एवं उनके दामाद श्री वीरेन्द्र चहल तथा उनके बड़े भ्राता आदि ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित विशाल आर्य महासम्मेलन की स्मारिका 'वेद उद्घोष' का लोकार्पण समारोह दिनांक 15 जनवरी, 2024 को आर्य समाज थापरनगर, मेरठ में हुआ सम्पन्न

कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में गत् नवम्बर 2023 में मेरठ में सम्पन्न हुए विशाल आर्य महासम्मेलन की स्मारिका 'वेद उद्घोष' का लोकार्पण समारोह गत् 15 जनवरी, 2024 को आर्य समाज थापरनगर, मेरठ में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की और इस संयोजन आर्य केन्द्रीय समिति के मंत्री श्री राजेश सेठी जी ने किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी के अतिरिक्त अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। श्री कुलदीप आर्य के भजनों के उपरान्त कार्यक्रम विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ।

मेरठ आर्य महासम्मेलन में जिन कार्यकर्ताओं ने रात–दिन मेहनत करके कार्य किया था उनको स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया और स्मारिका का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। स्मारिका अत्यन्त आकर्षक थी। जिसमें कागज, साज–सज्जा एवं विषय वस्तु गुणवत्ता की दृष्टि से अत्यन्त सुन्दर थी। उपस्थित सभी लोगों को स्मारिका भेंट स्वरूप प्रदान की गई। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहवर्द्धक रहा।

आर्य समाज अवंतिका, गाजियाबाद का वार्षिक समारोह

13 व 14 जनवरी, 2024 मकर संक्रांति के अवसर पर धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य वक्ता एवं आचार्य योगेश रहे यज्ञ के ब्रह्मा

आर्य समाज अवंतिका, गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव 13 व 14 जनवरी, 2024 मकर संक्राति के अवसर पर धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर युवा विद्वान् आचार्य योगेश जी ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया और दोनों दिन अपने प्रवचनों से श्रोताओं को आन्नदित किया।

मकर संक्रांति के दिन आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में पधारे और उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द सम्पूर्ण क्रांति के पुरोधा थे। उन्होंने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए अज्ञान, अन्धविश्वास, अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध अपने जीवन का बलिदान दिया था। सामाजिक कुरीतियों पर चोट एवं अंग्रेज साम्राज्य के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करने के कारण स्वामी जी को जहर के प्याले पीने पड़े और अल्पायु में ही वे कुटिल लोगों के षड्यन्त्र के शिकार हो गये।

उत्सव में आर्य समाज के प्रधान श्री वेद प्रकाश तोमर एवं आर्य नेत्री एवं विदुषी डॉ. प्रतिभा सिंघल की सक्रिय भूमिका रही। उन्होंने अपने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के सहयोग से इस कार्यक्रम को सफल बनाया। इस अवसर पर बच्चों ने महर्षि दयानन्द पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

प्रो० विट्ठलराव आ५, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।